सांख्य दर्शन (SANKHYA PHILOSOPHY)

परिचय (Introduction) :

- सांख्य दर्शन भारत का अत्यन्त प्राचीन दर्शन है।
- सांख्य दर्शन के प्रणेता महर्षि कपिल हैं।
- सांख्य दर्शन के ज्ञान का प्रामाणिक स्रोत महर्षि कपिल , निर्मित 'सांख्य – सूत्र' और इश्वरकृष्ण रचित 'सांख्य कारिका' है।
- सांख्य शब्द का अर्थ सम्यक ज्ञान तथा संख्या बताया गया है।
- यह एक आस्तिक दर्शन है।
- सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी दर्शन है। यह प्रकृति और पुरूष दोनों की सत्ता स्वीकार करता है।
- सांख्य दर्शन विकासवाद का समर्थक है। यह पुरूष और प्रकृति के सहयोग से विश्व को उत्पन्न बताता है।

कार्य – कारण का सिद्धांत (Theory of Causation)

- सत्कार्यवाद का शाब्दिक अर्थ – सत्त (Existance), कार्य (Effect) , वाद (Theory) है।
- सत्कार्यवाद उस सिद्धांत को कहते हैं जो उत्पत्ति के पूर्व कारण में कार्य की सत्ता स्वीकार करता है।
- सांख्य के कारणता सिद्धांत सत्कार्यवाद तथा न्याय – वैशेषिक के कारणता सिद्धांत को असतकार्यवाद कहा जाता है।
- सांख्य – दर्शन कार्य की सत्ता को उत्पत्ति के पूर्व कारण में मौजूद मानता है।

सत्यकार्यवाद के रूप

- सत्यकार्यवाद के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है कि क्या कार्य कारण का वास्तविक रूपान्तरण है ?
- सांख्य-योग एवं विशिष्टताद्वैत वेदान्त इस प्रश्न का भावात्मक उत्तर देता है जबकि अद्वैतवेदान्त प्रवर्तक आचार्य शंकर इस प्रश्न का निषेधात्मक उत्तर देतें हैं।
- सांख्य दर्शन एवं रामानुज के विचार को परिणामवाद एवं आचार्य शंकर के विचार को विवर्तवाद कहते हैं।
- सांख्य समस्त विश्व को प्रकृति का परिणाम मानता है। अतः सांख्य के इस मत को प्रकृति परिणामवाद कहा जाता है।
- रामानुज के मत को ब्रह्म परिणामवाद कहा जाता है क्योंकि यह विश्व को ब्रह्म का परिणाम मानता है
- विवर्तवाद के अनुसार कार्य कारण का विवर्त है अर्थात कार्य कारण का अवास्तविक रूपान्तरण है।

सत्कार्यवाद के रूप (Forms of satkaryavada)

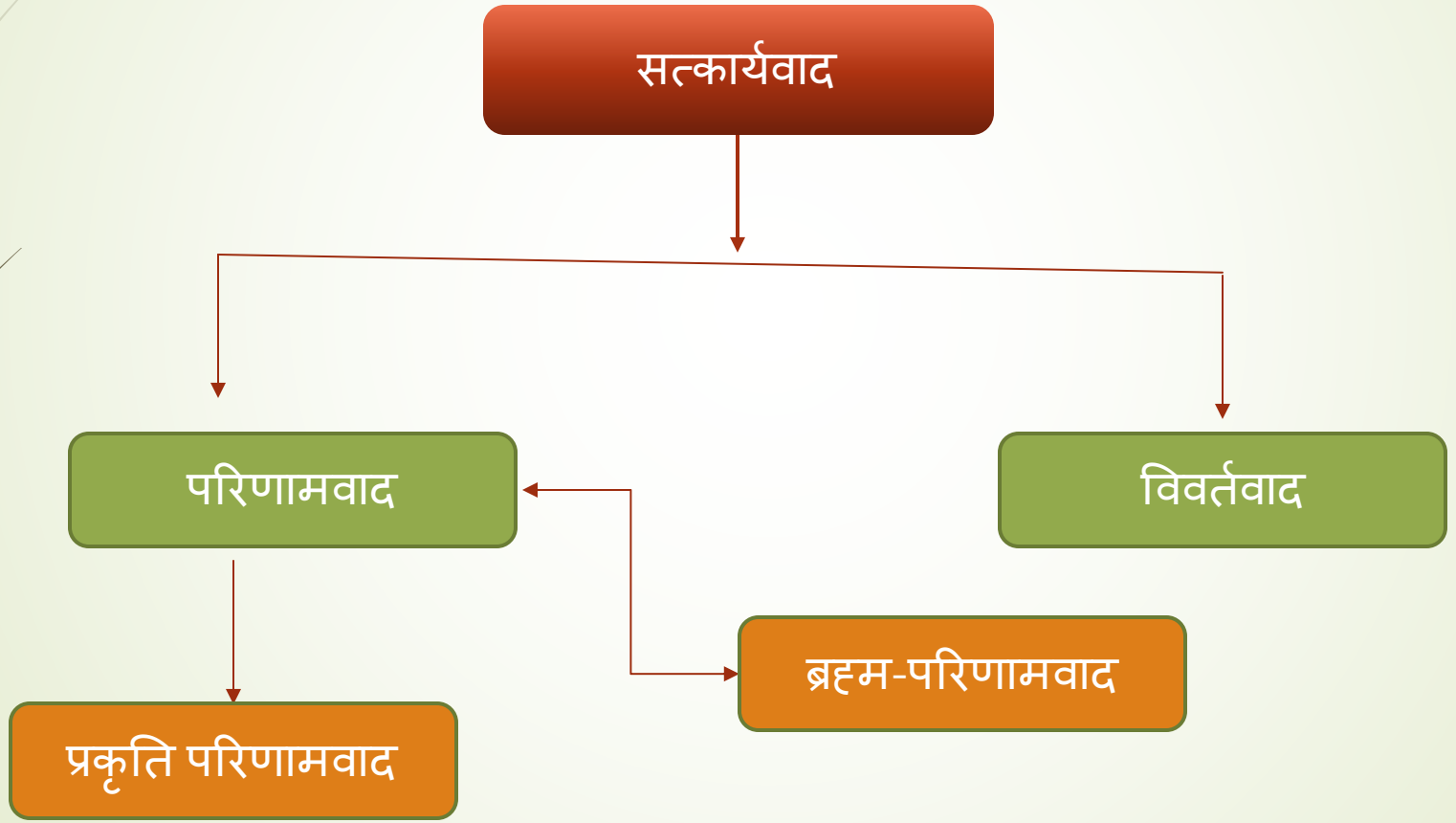

डॉ.सच्चिदानंद प्रसाद
डॉ. राज नारायण सिंह

दर्शनशास्त्र विभाग
आर आर एस कॉलेज , मोकामा
(पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय)